राजनेताओं को अयोध्यावासियों के सुख-दुख से कोई मतलब नहीं

असली अयोध्या को नजर भर देखिए

राहुल पाण्डेय

अयोध्या को लेकर जब भी कोई राजनीतिक बयान आता है या सरकारी घोषणा होती है, तो मेरे जैसे अयोध्यावासी हैरत में पड़ जाते हैं। समझ में नहीं आता कि राजनेता आखिर किस आंख से हमारे शहर को देख रहे हैं? लगता है जैसे आज की तारीख में दो अयोध्या नगरी हो गई हैं। एक जो न जाने कब से बदहाल, अलग-थलग पड़ी है। दूसरी, जो सिर्फ नेताओं को नजर आती है और उनकी ही आंख से पूरे देश को दिखाई जाती है। उनके निशाने पर पूरे उत्तर भारत का हिंदू वोटर रहता है, लेकिन उनके बयानों और फरमानों से अयोध्यावासियों का कुछ भी लेना-देना नहीं होता। हाल की घोषणाओं को ही लें। एक तरफ केंद्र सरकार वहां रामायण संग्रहालय बनाने जा रही है, दूसरी तरफ उत्तर प्रदेश सरकार ने रामकथा पर एक इंटरनेशनल थीम पार्क बनाने का फैसला किया है। अखिलेश सरकार अपनी चलाचली की बेला में भी थीम पार्क पर 22 करोड़ लगाने वाली है, जबकि मोदी सरकार संग्रहालय के लिए 225 करोड़ रुपये खर्च करेगी।

क्या इन दोनों सरकारों ने एक बार भी अयोध्या के स्थानीय लोगों का मन टटोलने की कोशिश की? उनसे पूछा कि वे यही सब चीजें चाहते हैं, या कोई और जरूरत उन्हें ज्यादा परेशान कर रही है? मेरी पैदाइश फैजाबाद की है। स्कूलिंग के कुछ सालों को छोड़ दें, तो ग्रैजुएशन तक मैं फैजाबाद और अयोध्या, दोनों नगरपालिकाओं के इधर-उधर ही रहता रहा क्योंकि घर दोनों जगहों पर है। अयोध्या भी मेरी ही तरह दो जगहों पर रहता आया है। यहां के लोग काम करने फैजाबाद जाते हैं, क्योंकि कचहरी से लेकर कमिश्नरी तक सारे सरकारी काम वहीं से चलते हैं। जिन लोगों के पास नौकरी, बिजनेस या कोई अन्य रोजगार नहीं है, वे पूरी तरह अयोध्या में बने मंदिरों पर निर्भर हैं। पांच हजार मंदिरों वाली इस नगरी में मंदिरों की बड़ी आय मकान के किराए से भी जुड़ी है।

अयोध्या में फैजाबाद जिले का सबसे बड़ा डिग्री कॉलेज साकेत है। आसपास के और जिलों से यहां हजारों की संख्या में आकर पढ़ने वाले छात्र-छात्राएं इन मंदिरों में कमरा लेकर रहते हैं। पिछले महीने ही खबर आई थी कि चार सौ से भी ज्यादा मंदिर जर्जर होकर तोड़ने की हालत में आ चुके हैं और इतने ही टूटने के कगार पर हैं। क्या किसी को इन मंदिरों की चिंता है? राममंदिर की बात जोरशोर से दोहराने वाले इन मंदिरों को लेकर चिंतित क्यों नहीं हैं, जबकि ये वहां के आम आदमी की रोजी-रोटी से सीधे जुड़े हैं। किसी थीम पार्क या म्यूजियम से अयोध्या के कितने लोगों को रोजगार मिल पाएगा? अगर वाकई

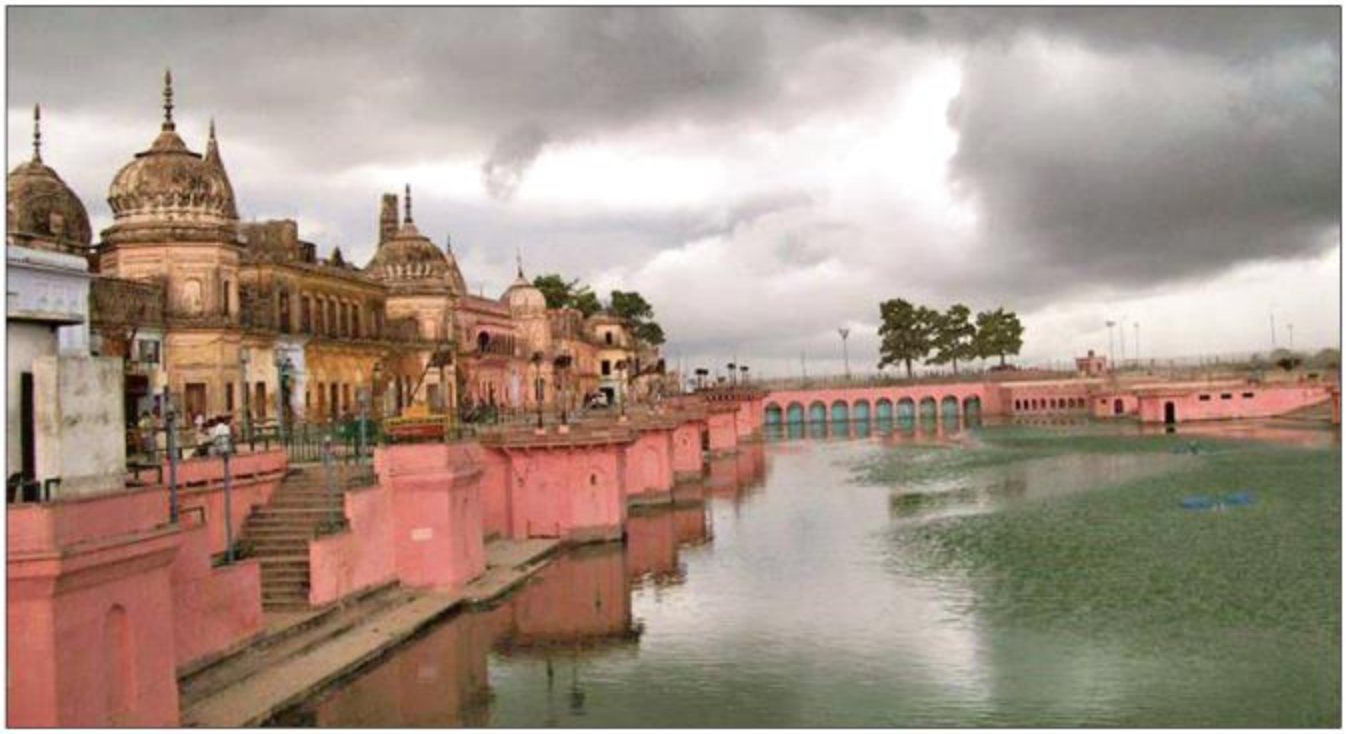

राम की पैड़ी का एक विहंगम दृश्य

> अयोध्या में विदेशी सैलानी न के बराबर आते हैं। यह बद्रीनाथ या तिरुपति बालाजी जैसा वीआईपी आस्था केंद्र भी नहीं है

अयोध्या की चिंता है तो उसके पुराने मंदिरों की साज-संभाल की जाए। कई साल पहले एक कोशिश राजीव गांधी ने की थी, जिसकी सूरत आज भी हमें राम की पैड़ी के रूप में दिखाई देती है।

अयोध्या में रोजगार का दूसरा मुख्य साधन यहां लगने वाले मेले हैं। यहां सावन, चैत और कार्तिक में लगने वाले मेलों और पांच तथा चौदह कोसी परिक्रमाओं से स्थानीय लोगों की अच्छी कमाई होती है। लाखों की संख्या में आसपास के जिलों के ग्रामीण जन स्नान, दर्शन, पूजन, मुंडन आदि के लिए यहां आते हैं। इन्हीं लोगों की सुविधा के लिए नयाघाट, जो कि स्नान का मुख्य घाट है, से सटकर राम की पैड़ी बनवाई गई थी। नदी से एक धारा निकालकर यहां कई सारे घाट बनवाए गए, जो कभी साफ नहीं रह पाए। जब-तब स्थानीय लोग कारसेवा करके इसे साफ कर देते हैं तो प्रशासन भी कुछ दिलचस्पी दिखाता है। आमतौर पर ये हमेशा गंदे ही रहते हैं।

स्थानीय लोगों के जीवन में नयाघाट, राम की पैड़ी और फैजाबाद में गुप्तारघाट (कहते हैं, यहां भगवान राम ने जलसमाधि ली) की भूमिका ज्यादा है। अभी भी शहर का एक बड़ा तबका अपनी सुबह और शाम नदी किनारे गुजारता है। अयोध्या को लेकर चाहे जितनी भी राजनीति की गई हो, लेकिन केंद्र की मेहरबानी उसकी तुलना में बनारस पर ज्यादा है। हालांकि अब तो खबर मिल रही है कि केंद्र द्वारा भेजे धन और उसकी बनाई योजनाओं का बनारस में भी कबाड़ा हो रहा है, क्योंकि अफसर राज्य सरकार का मुंह देखकर काम करते हैं। फिर भी बनारस में रोजगार सृजन फैजाबाद-अयोध्या से ज्यादा हुआ है।

अयोध्या में विदेशी सैलानी न के बराबर आते हैं। यह बद्रीनाथ या तिरुपति बालाजी जैसा वीआईपी आस्था केंद्र भी नहीं है। बाहर वालों के लिए रामजन्म भूमि प्रमुख है, लेकिन खुद अयोध्या के लोग रोजाना सबसे ज्यादा हनुमानगढ़ी और नागेश्वरनाथ पर ही पत्तल-लोटा लेकर चढ़ते देखे जाते हैं। रामजन्म भूमि इसलिए भी लोगों के दिमागी नक्शे के बाहर है, क्योंकि वह पूजा-पाठ के लिए सहज सुलभ नहीं है। कनक भवन, नागेश्वरनाथ मंदिर, लक्ष्मण टीला, हनुमानगढ़ी, दशरथ भवन जैसे उंगलियों पर गिनने जाने लायक मंदिर ही श्रद्धालुओं के दैनंदिन पूजा-पाठ के केंद्र हैं। गुरुओं-महंथों ने अपने-अपने भक्त पहले से सेट कर रखे हैं। सभी प्रदेशों और कई जातियों के अपने-अपने मंदिर भी हैं जो उनसे जुड़े श्रद्धालुओं के रुकने के काम आते हैं।

जब मैं बीकॉम में था तो रोज सुबह पांच बजे कजियाना से थाना रामजन्म भूमि ट्यूशन पढ़ने जाता था। कोई ऐसी गली नहीं थी जहां बड़े या बच्चे नाली किनारे निवृत्त होते न दिखते हों। कॉलेज की स्विमिंग टीम में जब हमें राम की पैड़ी में प्रैक्टिस कराने के लिए ले जाया जाता तो हम स्वर्गद्वार से ही खिलाड़ियों को बुलाते हुए उबकाई लेते जाते। साफ है कि अयोध्या को किस चीज की जरूरत है!